वैदिक युग– पूर्व वैदिक युग– मजूमदार चौधरी दत्त।

1. मूर्तिपूजा प्रचलित नहीं थी।
2. इन्द्र के उपासक जन दो दलो में विभक्त थे।
3. सृंजय और भरत जन दोनों मित्र थे।
4. युद्ध तर्वस, द्रध्य, अनु सुरू।
5. यदु और तुर्वष ऋग्वेद के दो प्रधान जन थे। तुर्वष ने एक राजा से युदृ में भाग लिया था, जिसका नाम पार्थव था।
6. भरज जन के राजा दियोदास का पुत्र सुदास था।

आर्यो के मध्य युद्ध–।

1. **दश यज्ञयुद्ध–** आर्यों को आर्यों के साथ।
2. सृंजयो ने एक युद्ध मे तुर्वषों और उनके मित्र वृचीव्रतों की सेना को हराया था।

आर्यो और अनार्यो के मध्य युद्ध

1. **शम्बर नामक दास सरदार**– दिवोदास।
2. कीकट (अनार्य)– भरत व त्रासदस्तुर (पुरू)

विभिन्न नदियॉ'–

स्वाट, कुर्रुम, गोमती, सिन्धु, काबुल, सुखोमा, झेलम, चिनाव, मरूदवृधा, रावी, व्यास, सतलज, सरस्वती, दशवतटी, यमुना, गंगा, सरजु।

राजनैतिक गठन–

ग्राम, विष, जन, राश्ट, सजन, सम्राट, पुर, धनुश, शिरस्मज, कबज, तलवार, पताका, वाध्येत, पुरपति आदि।

समकालिक जीवन"

1. ऋग्वेद में लवण का उल्लेख नहीं मिलता।
2. अहन्या (गाय) रथधावन वाययेगयज्ञं।
3. ब्रम्हचारी, मुनि, ग्रहपति।

आर्थिक जीवनः–

1. नगर ाब्द का उल्लेख नहीं मिलता।
2. ब्रजपति ग्रामीण की, जिल्य (घास का मैदान।
3. अनाज को धाना अथवा देव कहा जाता था।
4. अश्टकर्णी गाय के लिए प्रयुक्त था।
5. पणि नें व्यापारी को कहते थे, जो अनार्य थे।
6. गाय मूल्य की प्रमाणिक ईकाई थी।
7. निश्क, यह सोने का आभूशण था, जिसे लेनदेन का माध्यम माना जाता था। इस पर राजकीय सत्ता का चिन्ह नहीं था।
8. समुद्र शब्द मिलता है।

9. रथ तथा वैलगस्थि संख्या वार होता था।

साहित्य तथा विज्ञानः–

1. ऋक संहिता एक गीतकाव्य है। इसके विभिन्न मंत्र विभिन्न त्रिषियों के द्वारा रचे गये है। ग्रसमद, विश्वामित्र, सामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, कण्य, अंगिश।
2. वैदिक संहिताओं में जनपद शब्द का उल्लेख नहीं मिलता। सर्वप्रथम उसका उल्लेख ब्राहम्णों में हुआ है।
3. वैदिक कालीन कवि हिमालय से परिचित थे, परन्तु यमुना के दक्षिणी प्रदेश से नहीं।
4. आर्यो के एक अन्य शत्रु पाणी थे, जो धनी लोग थे तथा वैदिक काल के अनार्यो को आश्रय देना स्वीकार कर दिया था तथा जो आर्यो के पशुओं का अपहरण करते है।
5. साधाहरण एक विवाह की प्रथा थी जो स्पष्टः अभिन्न होता था, क्योकि ऋग्वेद में सम्बन्ध विच्छेद तथा विधवाओं के पर्नविवाह का उल्लेख नहीं मिलता।
6. हाथी का वर्णन केवल उत्तरकालीन मंत्रों में मिलता है और उस समय वह एक वन्य पशु के रूप में था।
7. सरामा नामक एक पवित्र कुतिया पौराणिक कथा में एक महात्वपूर्ण स्थान रखती है।
8. सोम तथा सुरा दो पेय मादक थे।
9. आर्य डोल मजीरे के साथ साथ बासुरी बीन बजाते थे। वे सप्त स्वरों का प्रयोग करते थे।
10. जुआरी विलाप नामक कविता का विवरण ऋग्वेद में मिलता है।
11. अयश शब्द ऋग्वेद में धातु के लिए तथा यव अनाश के लिए प्रयोग हुआ है। बाद में अयश का प्रयोग लौह तथा यव का जौ के रूप में किया जाने लगा।

उत्तरवैदिक कालः–

1. सुदूर भारत में विस्तार हो जानें के पश्चात् उन्होनें अपनें मूल निवास स्थान पंजाब तथा उत्तर पश्चिमी सीमा को विस्तृत कर दिया। 30वें कालीन गंथ में इसका बहुत कम वर्णन मिलता है।
2. इस काल में धार्मिक यज्ञों का अत्यधिक विकास हुआ। जिनमें परिपशु, राजसूप, वाजपेय तथा अखमेय थे।?
3. परिपशु यज्ञ यह मुख्यतः राजसी ऐश्वर्य की वृद्धि के साथ किया जाता था।
4. वाजपेय यज्ञ अथवाा शक्तिवर्धक यज्ञ। यह एक प्रकार का नवयौवन वर्धक उत्सव होता था जो मध्य वयस्क राजा को शारिरीक बल पुनः प्रदान करता था।
5. ऋग्वेद में केवल सोना, तांबा, तथा कॉसी का उल्लेख मिलता है। जबकि उत्तर वैदिक काल में टिन, शीशा, चादी तथा लोहे का उल्लेख मिलता है।
6. ठस समय तक भी सिक्कों तथा लेखन कला का कोई वर्णन नहीं मिलता है।
7. गीता महाभारत के छठे अध्याय में शामिल है।
8. ऋग्वैदिक काल में आर्यो को दासों से ज्यादा खतरा दस्युओं से था।
9. शतपथ ब्राहम्ण मे वर्णित विदेश माध्य की कथा में सदानीस बिहार नही ंके पूर्व रहनें की अनुमति दी गयी।
10. शुनःशेख ऋकख तथा दिवालिये जुआरी की कहानी– ऋग्वेद में मिलती है।
11. सभा पुरानी संस्था थी क्योंकि इसका उददेश्य ऋग्वेद के मूल भाग में मिलता है।

12. उत्तरवैदिक साहित्य मे ऋत की धारणा पूर्व से लुप्त हो जाती है।
13. पॉसे के खेल द्वारा ऋत की स्थापना एवं रक्षा होती है।
14. गोत्र शब्द सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।
15. सविन्ड विवाह का उल्लेख उत्तरवैदिक काल में हुआ।
16. गार्गी न्याज्ञवल्य संवाद जनक की सभा में हुआ था।

क्रम सें:–

1. ऋग्वेद– 1028 मंत्र।
2. यजुवेद– गघ व पघ में यज्ञ सम्बंधी अनुष्ठान।
3. समवेद– ऋग्वैदिक द्वंदों का संकलन।
4. अर्थर्ववेद– तंत्रमंत्र।
5. ब्राहम्ण गंथ– गध से अनुशठानिक विधि।
6. आख्यक ग्रंथ– गुप्त व जोखिम भरे ऐन्द्रिय जालिक किया कलाप।
7. उपनिशिद– आख्यकों की टीकायें।
8. उत्तर वैदिक युग– 1500–1000 बी0सी0।
9. ऋग्वैदिक युग– 1000–600 बी0सी0।

पंजाब– (पंच+आब) पॉच नदियों के आधार पर शत्रुदी (सतलज) विवासा (व्यास), वरूणी (राकी), अक्सिनी (चेनाब) वितस्ता (झेलम)।।

आर्य– यह रथ और घोड़ो पर सवार होकर युद्ध करते थे। ऋग्वेद में आर्यो का वर्णन नगर वंसक के रूप में किया जाता है न कि नगर निर्माता के रूप में। ऋग्वेद में अयश का अर्थ कांसा था।

गविश्टि शब्द– युद्ध के लिए प्रचलित था।

पुत्री दुहिती– गाय का दुध दोहनें के कारण।

गोधन– अतिथि के लिए गाय का वध करनें वाला।

प्राचीन काल में सामाजिक व्यवस्था व परिवर्तन:–

1. **पारिणी काल** – 5वी सदी।
2. चतुवर्ग का संकेत मिलता है।
3. ब्राहम्ण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र।
4. **आश्रम**– चार आश्रम व्यवस्था का भी उल्लेख मिलता है। वर्णी– ब्रम्हचारी, ग्रहपति– ग्रहस्थ, श्रमन– सन्यासी,
5. **कुमारी**– अविवाहित कन्या।
6. **वर्या–** विवाहयोग्य कन्या।
7. **अपूव**– ऋग्वैदिक काल, सिद्ध भोजा।

सूत्रकाल:–

1. **वर्ण व्यवस्था** की विधिवत् स्थापना– ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
2. **अन्य जातियॉ–** अनुलोम और प्रतिलोम विवाहों के कारण उत्पन्न हुई।
3. **वर्णशंकर जातिया**– जातियों से वर्णशंकर जातियॉ उत्पन्न हुई।

आश्रम व्यवस्था की विधिवत् स्थापना:–

1. शूद्रों को छोड़कर शेष तीनों वर्गो का उपनयन संस्कार होता था।

2. कन्या का भी उपनयन संस्कार होता था। वह भी ब्रम्हचर्य यज्ञोपवीत धारण करनें की अधिकारी थी।
3. **स्नातकावस्था**– ब्रम्हचर्य के बाद और विवाह अर्थात ग्रहस्थ आश्रम में प्रवेश के पूर्व की स्थापना।
4. **चतुर्थी कर्म**– विवाह के तीन दिन पश्चात् नव दम्पति का चतुर्थी कर्म होता था। इसमें दोनों के समागम का विधान था।
5. **सधोवधू–** जो कन्या ब्रम्हचर्य का पालन करती हुई ग्रहस्थ आश्रम का प्रवेश करती थी।
6. ब्रम्हवादिनी– ये विवाह अर्थात ग्रहस्थ जीवन त्याग कर अजीवन ब्रम्हचर्य व्रत का पालन करती थी।
7. सपिन्ड, सगोत्र, सप्रवर, विवाह वर्णित थे।
8. द्विजातियों के लिए शुद्रा स्थिति से शादी करनें की अनुमति नहीं थी।
9. श्रेत्रज, नियोग प्रथा से उत्पन्न संतान क्षेत्रज नियोगी का पुत्र होता था वह स्त्री के वास्तविक पति के लिए कोई धार्मिक क्रिया नही कर सकता था।
10. **पुनर्भ–** जो स्त्री पर्नुविवाह करती थी।
11. **पौनभव**– पुनर्भ की संतान।
12. **वैदेहक**– वैश्य पुरूश व बाहम्णस्त्री से उत्पन्न संतान।
13. **आयोगव–** शरद पुरूश– वैश्याकर्म।
14. **मैत्रेयक–** वर्णशंकर जातियों से उत्पन्न।
15. **असूर्यपश्या–** स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द, सूर्य को न देखनें वाली।

क्रम से:–

1. **आपद्धधर्क**– ब्राहम्ण द्वारा काफर वाकिया का अपना जमाना।
2. **कायस्थ**– गुप्तकालीन अभिलेखों का स्वर्ण था।
3. **शुद्रो की स्थिति में परिवर्तन–** शुद्रों के व्यापार, कृशि आदि होनें की अनुमति प्रदान करती है।
4. शुद्रों को महाकाव्यों तथा पुराणों के श्रवण का अधिकार मिला हुआ था।
5. दासप्रथा प्रचलित थी।
6. गुप्त काल में स्त्रियों का उपनयन संस्कार बंद हो गया, वेद अध्यन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
7. भानुगुप्त के कारण अभिलेख में सतीप्रथा का उल्लेख मिलता है।
8. वैश्यावृति निन्दनीय थी।

मौर्या युग–

1. यद्यपि समाज में यह धारणा थी कि शूद्र अछूत है, बढ़ रही थी परन्तु यह उच्च सीमा तक नही पहुँची थी।
2. **कैटिल्य–** विवाह के अन्य प्रकार, नियोग प्रथा तथा बहुविवाह की चर्चा करता था।
3. भारतीय समाज के सात प्रकार– दार्शनिक, कृशिक, पशुपालन, कारीगर, योद्धा, निरीक्षक, मंत्री।
4. अर्थशास्त्र में वार्ता, कृशि, पशुपालन, तथा वाणिज्य को शूद्र का धर्म बताया गया है।

शुंग युगः–

1. वर्ण व्यवस्था की पुनः स्थापना।
2. जाति प्रथा में जटिलता।
3. **ब्रात्य संकर**– वर्णाश्रम संस्कारों को न माननें वाली जाति को कहा जाता था।
4. तलाक की प्रथा नहीं थी।
5. नियोग तथा विधवा विवाह प्रचलित थे।

कम सें:–

1. अछूतों का सर्वप्रथम उल्लेख पारिणी ने अश्ठध्ययी में किया है।
2. **कायस्थ का उल्लेख**– याज्ञवल्य स्मृति 4वीं शताब्दी`में हुआ।
3. अनेक ब्राहम्ण ग्रंथों में कायस्थ की उत्पत्ति शुद्रों से मानी गयी है।
4. कैटिल्य कम से कम 18 जातियों का उल्लेख करता है।

गुप्तोत्तर काल में सामाजिक परिवर्तनः–

1. **भट्ट भुवनदेव कृत**– अपराजित पृच्छा में सामंतो की नौ श्रेणियों का वर्णन मिलता है।
2. 12वी शताब्दी तक राजपूतों की 36 जातियॉ प्रसिद्ध थी।
3. इस काल में कृशकों के रूप में श्रूदों का रूपान्तरण हुआ और वैश्यों के स्तर से शूद्र स्तर तक गिरावट मुख्य सामाजिक परिवर्तन के लक्षण थे।
4. **कुसीदवृति–** सूद पर रूपया उधार देना वैश्यों का मुख्य पेशा था।
5. **कुटुम्बी**– कृशक दासों को।
6. **मेघातिथि के अनुसार**– शूद्र चौथे आश्रम के फल के अधिकारी नहीं होते थे। वह मात्र ग्रहस्थ आश्रम में रहकर ग्रहस्थ के रूप में काम करते थे।
7. **आर्धीक–** फसल बहाई करनें वाला।
8. **मूर्तधर्म–** सभाहिक के कार्य तालाब खुदवाना, आदि।
9. यद्यपि शूद्रों की स्थिति में सुधार के बावजूद भी उन्हे वेदाध्यन एवं श्रवण तथा वैदिक यज्ञ करनें का अधिकार नहीं था।

विक्रम संवतः– 57 बी0सी0।
शकसंवत्– 78 ए0डी0।
गुप्त संम्वत – 319 ए0डी0।
हर्श संवत्– 606 ए0डी0।

1. इस काल में अश्पृश्टता की भावना काफी खराब हो गयी थी। पहले मात्र चंडाल को ही अश्पृश्य माना जाता था, अब नर, चमार, धोबी आदि सात जातियों की भी अश्पृश्य माना जानें लगा।
2. आदर्श विवाह कन्या का 8 वर्श माना जाता था।
3. पूर्व मध्य कालीन अधिकांश स्मृतियॉ तथा विज्ञानेश्वर आदि नें सती प्रथा की प्रशंसा थी।
4. इस समय दास दासियों का व्यापार तथा उन्हें दान देनें की प्रथा अपनी प्रचलित थी।
5. इस काल में यदि किसी मणिलिक द्वारा यातना के कारण दासी की मृत्यु हो जाती है तो वह दोशी न होगा और न ही दंडित ही किया जाएगा। इस समय न तो दासों को जीवन रक्षा व न ही दासत्व मुक्ति के नियम बनाये गये। अतः स्पश्ट है कि इस काल में दासों की दशा प्राचीन काल से दयनीय थी।

6. आठ वर्श की लड़की को गौरी तथा 10 वर्श की लड़की को कन्या कहा जाता था।

ट्रेड एंड कामर्सः—

1. सूर्या महा काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मन भारत का प्रसिद्ध अभियंता था।
2. सुपारी का प्रचलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत में पहली शताब्दी के लगभग तक।
3. अंगर की खेती का प्रचलन उत्तरी भारत में फारस से हुआ था।
4. हाथी को सम्भवतः बुद्ध काल तक पालतू पशु बना लिया गया।
5. भारत में सिल्क का उत्पादन बर्मा के रास्ते चीन से पूर्व प्रथम शताब्दी के आस पास हुआ।
6. **सात पवित्र नगर**— अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, कॉची, उज्जैन, द्वारिका और काशी।
7. गुप्तकाल के सभी मकान ढोलाकार छतों के होते थे।
8. गुलाब के पौधों को मुसलमान अपनें साथ भारत लाए थे।
9. मध्य युग में पोलो खेत मध्य एशिया से भारत आया।
10. रथदौड़ का उल्लेख उतना प्राचीन है जितना ऋग्वेद।
11. मध्य एशिया से शक एंव कुशाओं के आक्रमणों के साथ साथ पायजामा भी प्रचलित हुआ।
12. जलेबी मुसलमानों की देन है।
13. प्रारम्भिक लिखित मुद्राएँ— विमकड किसेस की मिलती थी।
14. तीन प्रचलित धातुएँ— सोना, चॉदी, ताबा।
15. सातवाहनों ने रांगे की मुद्राओं का भी निर्माण करवाया।
16. भारत वर्श में लोहे का मुख्य उत्पत्ति स्थान— दक्षिण विहार।
17. स्थल नियामक— इसका उल्लेख पालिग्रंथों में मिलता है। वह मरूस्थलों एवं निर्जन प्रदेशों में नक्षत्रों द्वारा मार्ग निदेशन करते हुए यात्रा दलों का पथ प्रदर्शन करता था।
18. **सोकोत्म—** यह प्राचीन उपनिवेश था।

व्यापारिक मार्कः—

1. श्रावस्ती से प्रतिशठान तक, श्रावस्ती से राजग्रह तक।
2. पश्चिम एशिया और यूनानी जगत से व्यापार, पश्चिमोत्तर के नगरों मूलतः तक्षशिला से होता था। तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक एक मार्ग था जो आज टी0जी0 रोड के रूप में माना जाता है।
3. **टरिकामें—** यह पूर्वीतट का बंदरगाह था।
4. दक्षिण की ओर सर्वाधिक प्रयुक्त होनें वाला मार्ग तक्षशिला से काबुल तक जहॉ से विभिन्न दिशाओं में सड़कें निकलती थी।
5. वेरिनिस व म्योस हारेमंस ये लालसागर पर स्थित थे।
6. मानसूनों हवाओं का प्रयोग सर्वप्रथम अरबों नें कियां ।इन उपयोगिताओं की खोज हिप्पोलस ने किया था।

श्रेणी व्यवस्थाः—

1. श्रेणियॉ व्यक्यिों के व्यक्तिगत जीवन में भी हस्तक्षेंप कर सकती थी। एक श्रेणी का सदस्य दूसरे श्रेणी के सदस्य के साथ भोजन पानी नहीं कर सकता था।

2. **श्रेश्ठि–** यह एक भिन्न प्रकार की श्रेणी जो बैंकिग वित्त प्रबन्धन तथा न्यासधारी का कार्य करती थी।
3. **सिक्का–** निश्क वपल(सोना), शतमान(चॉदी), काकिनी(तॉबा) रागां में।
4. **बारकरीकम**– यह सिन्धु नही के मुहानें का महत्वपूर्ण बन्दरगाह था।
5. दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा रोमन सिक्के आगस्थ तथा टाईवेरियस के पाये गये है। चूँकि नीरों के सिक्कों में खोट था। इसलिए लोगों ने उसे जमा नहीं किया।
6. रोमनों के साथ व्यापार दक्षिण भारत से ही होता था।
7. रोमन सम्राट आगस्त के दरबार में एक दूत को भेजा गया था। जो 4 साल बाद 21बी0सी0 में पहुॅचा था।

क्रम सें:–

1. मौर्य साम्राज्य के बाद मुख्य न्यायिक केन्द्र कपिशा, तक्षशिला, पुश्पकलवती, विदिशा, मथुरा, साकल इसको इण्डोग्रीक शासक मिनेन्डर ने संरक्षण प्रदान किया था।
2. कुशाणों ने निम्न देशों से अपनें सम्बन्ध स्थापित कियें। जैसे, चीन, रोम, सिन्धु, सौवीर, कपिशा, गंधार, पुश्पकलावती, मथुरा, वाराणसी।
3. **सिन्धु सभ्यता–** सुमेर, झेलम, अनातोलिम, क्रीट, ग्रीस, सुमेर, डर, किश, लगश, तलअशमार में पायी गयी। मिस्त्र में सुमेर की मध्यस्थता से वस्तुएॅ पहुॅचती थी।
4. वैटरेन के व्यापारी सक्रिय रूप से मध्यस्थता की भूमिका निभा रहे थे।

गुप्त युग–

1. वैदिक युग में खैबर के रास्ते वैक्टिया का मार्ग जाता था। जहॉ से भारतीयों का सम्पर्क मध्य एशिया से हुआ था।
2. पेन्टेड वेयर साईटस– इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, काम्पिल्य।
3. उलेक्जेन्ड्रिया यह भी एक महात्वपूर्ण स्थान था। यहॉ से रोम के बन्दरगाह को सीधे मार्ग जाता था।
4. चन्द्रगुप्त द्वितीय पहला गुप्त शासक था, जिसनें चॉदी के सिक्कों को चलवाया, उज्जैन के शकों को पराजित करके।
5. गुप्त युग में सोनें चॉदी व तॉबे के सिक्के ढलवाएॅ गये।
6. स्पोटेड और ब्लैक मनी उधार के लिए गये पैसे को कहते थें।
7. रेशम व मसाले दो महात्वपूर्ण वस्तुएॅ थी।
8. 4थी से 10वीं शताब्दी में विजेन्टाईन सिक्के भारत के विभिन्न भागों से पाए गये।
9. घोड़ा अरब वार्शिया तथा अफगान से आते थे।

मौर्य युग– अशोक

1. बहुबलियों में अशोक के अभिलेख पहली दूसरी बी0सी0 में श्रीलंका में पाए गये।
2. **श्राजक नियुक्ति**– राज्य के न्यायिक प्रशासन के लिए।
3. **धर्ममहाभारत**– विभिन्न वर्गो में धर्म प्रचार के लिए।
4. अशोंक ने धर्म के आचरण का उददेश्य स्वर्ग की प्राप्ति को माना है न कि निर्वाण को।
5. **चार लिपीय प्रयोग**– कहमी, खरीश्ठी, अमेरिक और ग्रीक।
6. **तीन भाषा–** प्रकृति, ग्रीक, संस्कृति।

7. यद्यपि मौर्य युग या पूर्व काल में दास थे, लेकिन भारतीय समाज को दास समाज नहीं कहा जा सकता है।
8. 26 प्रकार के अध्यक्षों की नियुक्ति आर्थिक गतिविधियों के लिए की गयी।
9. 80 खम्भों का मकान कुमहार पटना से पाया गया।
10. मौर्य युग में पहली बार उत्तरी भारत में पक्के इटों का प्रयोग किया।
11. गोल कुँए भी पहली बार मौर्य युग में बनाए गये।
12. रज्जुक– अशोक इन्हें न्यायप्रशासन के लिए नियुक्त करता था। ये पुरस्कार तथा दण्ड दोनों का कार्य करते थे।
13. **धर्ममहामात**– धम्म के प्रचार के लिए।
14. **पण–** यह चॉदी का सिक्का होता था।
15. मौर्य काल में व्यापक पैमानें पर कृशि कार्यो में दासों को लगाया गया था। पंच मार्क इनकी राज मुद्रा थी।
16. **अशोक के सतम्भ**– बलुआ पत्थर का एकश्मक है।

सिन्धु सभ्यताः–

1. विकसित कृशि और स्थायी ग्राम का सम्भवतः ईसा से वर्श पहले मध्य पूर्व में जन्म हुआ था।
2. हड़प्पा सभ्यता का निर्माण यहॉ पहले से रह रहे स्वदेश वासियों ने किये थे न कि बाहर से आकर दूसरे लोग।
3. हड़प्पा सभ्यता के लोग पूर्ण ईश्वरवादी थे।
4. सिन्धु सभ्यता के किसी भी नगर में पत्थर से बनी कोई भी इमारत प्राप्त नहीं हुई है, ईट का प्रयोग ही होता था।
5. इनके ग्रहों के द्वार अधिकतर पतली गलियों में खुलते थे तथा उनमें सड़कों की ओर कोई खिड़की नही होती थी।
6. मोहनजोदड़ो का स्नानागार आयताकार था।
7. यहॉ के निवासियों ने स्वच्छता की ओर ध्यान धार्मिक दृश्टिकोण से ज्यादा किया था, स्वास्थ से कम।
8. चॉदी तथा नीलम का आयात आफगानिस्तान तथा फारस से तॉबा राजस्थान फारस से चूना तथा जेटा ईट पत्थर तिब्बत से आता था।
9. सिन्धु सभ्यता व मैसोपोटामियॉ के बीच व्यापार की मुख्य साम्रगी कपास थी।
10. अब तक दे‍ा हजार मुद्राएँ मिलती है, जिनमें ज्ञात होता है प्रत्येक मुख्य नागरिक के पास एक मुद्रा होती थी।
11. मुद्राओं का मुख्य उददेश्य सम्पत्ति पर स्वामित्व प्रगट करना था।
12. उनकी सर्वाधिक आश्चर्य पूर्ण कलात्मक सफलता सम्भवता मुद्राओं के चित्रांकन में थी।
13. मुद्राओं पर कही भी गाय के चिन्ह नहीं अंकित थे।
14. हड़प्पा के दीवान फादर हेरास नें सिन्धु लिपि को पड़नें का प्रयास किया था। कहा जाता है कि उनकी भाशा तमिल भाशा का आदि रूप है।
15. कपास का प्रयोग सर्वप्रथम हडप्पा द्वारा किया गया। चावल इस समय मुख्य उपज नहीं थी, गेहूॅ, जौ मुख्य उपज थी।
16. लोथल से मेसोपोटामिया की एक मुहर मिली है।
17.

एन0सी0ई0टी0:–

1. कालीबंगा तथा सवाली में हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन सांस्कृतिक अवस्थाओं के दर्शन होते है।
2. गुजरात से कठियावाड़ प्रायादीप में रंगपुर स्थलों पर इस संस्कृति की उत्तरावस्था के दर्शन होते है।
3. मोहनजोदड़ो हड़प्पा के पास दुर्ग थे। मोहन जोदड़ो का स्नानागार इसी दुर्ग में था।
4. मोहनजोदड़ो का अन्नागार सबसे विशाल इमारत थी।
5. हड़प्पा में छः अन्नागार तथा एक मजूमदार निवास था।
6. सिन्धु प्रदेश उस समय काफी उर्वर था। इसकी उर्वरता का कारण प्रतिवर्श सिन्धु में आनें वाली बाढ़ थी।
7. यहॉ फसल की बुआई नवम्बर में तथा कटाई अप्रैल में होती थी।
8. सिचाई के लिए नहरों की व्यवस्था नहीं थी। अन्न दूसरों के लिए उत्पादित किया जाता था। जैसे शहरी व्यापारी शिल्पी आदि के लिए। गुजरात में बसे हुए लोग चावल पैदा करते थे।
9. तॉबा बलुचिस्तान से तथा टिन अफगानिस्तान से आता था।
10. सोना चॉदी अफगान से कीमती पत्थर दक्षिणी भारत से।
11. व्यापार प्रतिव्यापार होता था।
12. हड़प्पा नगरों में व्यापारी वर्ग का शासन चलता था न कि मेसोपोटामियॉ की तरह पुरोहित वर्ग का।
13. शिव की सर्वाधिक प्राचीन मूर्ति योगी के रूप में सिन्धु सभ्यता से मिली है।
14. ,लिगं व योनि पूजा हड़प्पा संस्कृति में सबसे पहले शुरू हुई।
15. योगी पशुपति व मातृदेवी की मूर्ति मोहनजोदड़ो से मिलती है।
16. सिन्धुवासी वृक्ष तथा पशु मानवरूप में देवताओं की पूजा करते थे।
17. हड़प्पा से एक कांसे की नृतकी मिली है यह नग्न है।
18. मोहनजोदड़ो से पुजारी का सिर मिला है।
19. कार्यकाल– से 2500 से 1750 बी0सी0।
20. 2200 से 2000 तक यह संस्कृति अपनी उन्नत अवस्था में थी। 150 में लगभग मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के नगर पूर्ण रूप से नश्ट हो चुके थे।
21. सभी सिन्धनगरों के मकान आयताकार थे।
22. यद्यपि हड़प्पा संस्कृति कॉस्ययुग की थी तथापि उन्होनें कांसे का उपयोग सीमित मात्रा में किया। ये ज्यादातर पत्थर के औजार का ही प्रयोग करते थे।

<u>प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थाः–</u>

1. उत्तरकालीन ग्रन्थों में द्विज शब्द का प्रयोग प्रायः बालकों के लिए होता था, परन्त यदि संस्कार हो जाए तो यह क्षत्रियों और वैश्यों के लिए भी आता था।
2. अधिवर्श– यज्ञ सम्बन्धी संस्कारों के समय ये शारिरीक कार्य सम्पन्न करते थे।
3. पुरोहित– पुरोहित का अर्थ कुटुम्ब के पुजारी से था जो हिन्दू धर्म के नियमों और संस्कारों का एक कुटुम्ब अथवा कुटुम्बों का पालन कराता था और जो इस रूप में आजतक विद्यमान है।
4. पाली धर्मग्रन्थों में जहॉ चार वर्गो का उल्लेख किया गया है वहॉ क्षत्रिय का नाम प्रथम आता है।
5. अर्थशास्त्र में शूद्रों को आर्य कहा गया है।

6. शूद्र यद्यवि वेदों का श्रवण व अध्ययन नहीं कर सकता था तथापि उसे महाकाव्यों और पुराणों के अध्ययन की अनुमति थी।
7. प्ंचम पंचम खण्ड का प्रयोग अछूता के लिए होता था।
8. मंदसौर अभिलेख में सिल्क बनानें वाले जुलाहों के संघ का उल्लेख मिलता है। जो नर्मदा में लाट नामक क्षेत्र में निवास करता था।
9. शूद्रों के दो वर्ग– प्रथम– दॉया हाथ, द्वितीय बॉया हाथ।
10. प्राचीन भारत में किसी भी जाति का कोई व्यक्ति कुछ निश्चित परिस्थितियों में दास हो सकता था। यदि कोई दास पुत्रहीन मर जाता था तो उसकी आत्मा को शान्ति प्रदान करनें के लिए उसका अन्तिम संस्कार करानें का भार उसके स्वामी पर होता था।
11. दासो को सम्पत्ति रखनें के उत्तराधिकार तथा अवकाश काल में स्वच्छता पूर्वक धनोपार्जन करनें का अधिकार था। दास कन्याओं की पवित्रता सुंरक्षित रहती थी। जो स्वामी दास कन्या के साथ बलात्कार करता था वह उसे धन देकर स्वतन्त्र कर देता था।
12. 16वीं शताब्दी में विजय नगर साम्राज्य में दास मंडिया विद्यमान थी।

गौत्र का मौलिक अर्थ गौ समूह है। अर्थववेद में सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग कपीला के अर्थ मे हुआ था। धार्मिक साहित्य मे सामान्य रूप से 8 गोत्रों का वर्णन मिलता है। कश्यप, विशिष्ठ, भगु, गौतम, भारद्वाज, अत्रि, विश्वामित्र, तथा आगस्तय। आठवें गौत्र आगस्तय के बारे में कहा जाता है। कि इसनें वैदिक धर्म का विस्तार विन्ध्याचल से दक्षिण में किया तथा दक्षिणों में एक प्रकार के आगस्तय को छोड़कर शेष सात मौलिक ऋशि मानें जाते है।

1. समस्त बाहम्णों की उत्पत्ति किसी न किसी ऋशि से मानी जाती है।, जिनके नाम आधार पर गोत्रों के नामकरण हुआ।
2. क्षत्रियों तथा वैश्यों नें उन्ही गोत्रों को अपनाया जो कि ब्राहम्ण के थे। उनके गौत्र का आधार किसी प्राचीन ऋशि के पूर्वज होनें पर निर्भर नही था। अपितु केवल इन ब्राहम्णों के कुटुम्ब के गौत्र पर था।
3. **दण्ड–** नीतिकारों के अनुसार जो मनुश्य सगोत्मय स्त्री से विवाह करे उसे चन्द्रायण पश्चाताप अवश्य करना चाहिए। जिसके अनुसार एक मास के कठोर व्रत के पश्चात् अपनी पत्नी को अपनी संगनी के समान रखना चाहिए। तथा ऐसे विवाह से उत्पन्न बालक को कोई कलंक नही लगता है।
4. **श्राद्ध संस्कार–** कौटुम्बिक समूह द्वारा सम्बन्धित था। जो पूर्वजों के समरण हेतु सम्पन्न होता था। जिसमें चावल के पिंड अर्पित किये जाते थे तथा यह विश्वास किया जाता था कि मृतक की तीन पीड़िया संस्कार द्वारा होनें वाले लाभ मे सम्मिलित हो सकती है।
5. वर्तमान काल में कैटुम्बिक विधान के सम्बन्ध में मिताक्षर तथा दॉया भाग नामक दो विचार धाराएँ जिनकी गणना वैधानिक ग्रंथों में की जाती हैं प्रचलित थी।
6. **मिताक्षरा के अनुसार–** पुत्र और पौत्र के अधिकर ग्रह स्वामी की मृत्यु के पूर्व ही पारिवारिक सम्पत्ति के हो जाते थे। ग्रह स्वामी सम्पत्ति का मात्र न्यासधारी ही इसे अपनें आश्रितो कों सम्पत्तिहीन बना देनें का कोई अधिकार प्राप्त नही था।

7. **दॉयाभाग के अनुसार–** पिता की मृत्यु के बाद ही पुत्रों का अधिकार सम्पत्ति पर होता था।
8. प्राचीन भारत में वसीयत करनें का कोई प्रचलन नहीं था तथा सबसे बड़े पुत्र को कोई विशेषाधिकार नहीं प्राप्त होता था।
9. अधिकांश विद्वानों ने स्त्रियों के उत्तराधिकार की अस्वीकृति दी है। परन्तु याज्ञवल्य नें पुत्रो की अनुपस्थिति में स्त्री को उत्तराधिकारी माना है।

आश्रम व्यवस्थाः–

1. चार आश्रमों की योजनानुसार जीवन का प्रारम्भ शारीरिक जन्म से नहीं होता था बल्कि उपनयन संस्कार से या यज्ञोपवीत धारण करनें के बाद होता था।
2. अनेंक पवित्र संस्कारों से यह प्रथम तीन जन्म से पहले ही सम्पन्न किये जाते थे।
3. गर्भाधान– गर्भधारण के लिए, पुसवन– पुत्र प्राप्ति के लिए, सीमान्तोन्या– गर्भ रक्षा के लिए।
4. दत्तक पुत्र द्वारा सम्पन्न श्राद्ध संस्कारों का फल संदिग्ध होता था।
5. उपनयन संस्कार– अवस्था ब्राहम्ण–8 वर्श, वैश्य– 12 वर्श, क्षत्रिय– 11वर्श। हाथ में दण्ड धारण किये हुए सन्यासी को वेशभूशा में दीक्षा दी जाती थी। यह इस संस्कार का मुख्य अंग थी।

शिक्षा–

1. शिक्षा के मुख्य विशय बंद थे, इसके अलावा शिक्षा के अन्य विशय भी जैसे वेदांग अथवा सहायक विज्ञान थे।
2. कल्व, शिक्षा, द्वन्द, निरूक्त, व्याकरण, ज्योतिश,।
3. इस समय तक्षशिला तथा काशी शिक्षा के मुख्य केन्द्र थे। तक्षशिला के मुख्य पंडित कैटिल्य तथा चाण्क्य थे।

विवाहः–

1. आयु– सामान्य दृश्टिकोण के अनुसार आर्दश विवाह वह होता था, जिसमें कन्या की आयु वर की आयु के 1/3 हो अर्थात कन्या 8 वर्श और वर की आयु 29 वर्श होनी चाहिए।
2. विवाह का समय– कन्या का पिता बारात में दूल्हे का मधु एवं दही से स्वागत करता था।
3. विवाहोपरान्त वर के वापस धर लौटनें पर वर तथा कन्या दोनों के लिए आवश्यक होता था कि वे विश्वास के प्रतीक ध्रुव तारा का दर्शन करें। वर को तीन रात कन्या से अलग सोनें का विधान था चौथी रात वह गर्भाधान कराता था।

पंच महायज्ञः– ब्रम्हयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ,। पुरूशयज्ञ अतिथि संस्कार द्वारा मनुश्य की पूजा। दाह संस्कार के 10 दिन बाद तक मृतक के लिए तर्पण किया जाता था।

स्त्रियॉः–

1. पति को पत्नी की सम्पत्ति पर कुछ अधिकार होते थे। घोर संकटकाल में उसको बेचनें बंधक रखनें का पति को पूर्ण अधिकार था। वह पत्नी को अपव्यय से रोक सकता था। फिर भी पत्नी की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति पति अथवा पुत्रों की न होकर उसकी पुत्रियों की होती थी।

2. गार्गी याज्ञवल्य संवाद– वृहदाएयक उपनिशद में मिलता है।
3. नियोगप्रथा– ईसवीं संवत् की प्रारम्भिक शताब्दीयों में समाप्त हो गयी।
4. अपनें पति के साथ सती हो जानें की प्राचीनतम

मुगल साम्राज्य का पतनः–औरगजेब ने अपनी मृत्यु के पूर्व उत्तराधिकारी युद्ध की सम्भावनाओं को रोकनें के लिए एक वसीयतनामा छोड़ रखा था, जिसमें उसनें अपनें तीनों बचे हुए पुत्रों मुअज्जम, मो0 आजम, मु0 मक्रबक्श को साम्राज्य को शान्पिूर्वक बाट लेनें का आदेश दिया था।

उत्तराधिकार युद्ध– जोजौ– जून 1707

1. बड़ा पुत्र मुअज्जम विजयी हुआ और बहादुरशाह की उपाधि धारण कर सिहांसनरूण हुआ। शाहआलम प्रथम उसे शाहेबेखर भी कहता था।
2. जहॉदार शाह, जजिया सम्राट लालकुमारी का प्रेमी था। इसने जुल्फीगार खॉ को अपना वजीर बनाया।
3. **फर्रूखासियर**– 1713 जजिया को समाप्त किया, सैययदबन्धु सहायक– हुसैनअली व अब्दुल्ला वजीर।
4. **मुहम्मदशाह– 1719–1748–रंगीला वजीर– निजामुलमुल्क।**
5. **नादिरशाह का आक्रमण**– 1739 यह फारसी था। कोहिनूर तथा मयूर सिंहासन को ले जानें के अलावा नादिर मो0 शाह नें सिन्धु नदी के पश्चिम के इलाकों को भी छीन लिया। अर्थात काबुल निकल लिया।
6. अहमदशाह– 1748–54 वजीर गयाउददीन इमादुल मुल्क।
7. अजीजुददीन– 1754–1774 इसनें औरगंजेब की उपाधि धारण किया और अपनें को आलमगीर द्वितीय के नाम से घोशित किया।
8. शाहआलम द्वितीय– 1759–1806।
9. टकबर द्वितीय– 1806 से 1837 तक।
10. बहादुरशाह जफर द्वितीय– 1837 से 1858 तक, मृत्यु– 1862 में।